प्रजजन एवं चयन संबन्धी कुछ ध्यान देने योग्य बातें :

प्रजजन काल में एक बकरा 20-25 बकरियों को पाल दे सकता है , इसलिए बकरे के चुनाव में सावधानियाँ अपनानी चाहिए। वह स्वस्थ तथा शुद्ध नस्ल का होना चाहिए। बकरे की आयु कम से कम 1-1½ वर्ष होनी चाहिए। पाल देने वाले बकरे का सम्बन्ध मादा बकरी से नहीं होना चाहिए अन्यथा उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। संबंधित बकरी-बकरे से पाल दिलाने को वैज्ञानिक भाषा में अन्त: प्रजनन कहा जाता है। इस प्रकार के प्रजनन कराने से छौनों की बढ़वार कम तथा रोग रोधक क्षमता भी कम हो जाती है। बकरियों का प्रजनन इस प्रकार कराना चाहिए कि छौने बरसात एंव अधिक ठंढ़े में पैदा न हों अन्यथा बच्चों की मृत्यु अल्पायु में हो जाती है। इसके अलावे वातावरण का प्रभाव दूध उत्पादन पर भी पड़ता है। ब्लैक बंगाल नस्ल की बकरियाँ सालों भर गर्म होती हैं। बकरियों से पूर्ण लाभ उठाने के लिए उनका प्रजनन अप्रैल-मई या अक्टूबर-नवम्बर में कराना चाहिए।

बकरियो में गर्म होने के लक्षण- जब बकरियाँ गर्म होती हैं तो बेचैनी, पूँछ को हिलाना, बार-बार पेशाब करना, चिल्लाना, बाह्य प्रजनन अंगो में सूजन तथा कभी कभी बाह्य प्रजनन अंगो से मोटा तरल पदार्थ निकलता है। प्राय: प्रजनन मौसम मे बकरियाँ 21 दिनो में पुन: गर्म होती हैं। बकरियाँ 26-42 घंटों तक गर्म रहती है। गर्म होने के 8-12 घंटें के बाद पाल देना उचित होता है। गर्भ धारण की अवधि 145 से 152 दिनों की होती है।

उत्पादकता बढाने के लिए बकरी को स्वस्थ्य होना जरूरी है। बकरों या बकरियों के चुनाव में जन्मजात गुण (माँस या दूध उत्पादन के लिए, भोजन करने की क्षमता तथा भोजन को माँस या दूध में बदलने की क्षमता का बहुत महत्व है।

बकरियों के भोजन की व्यवस्था: वैसे तो बकरियाँ पूर्णत: चराई पर निर्भर रहती हैं परन्तु चराई के अतिरिक्त यदि कुछ दाना मिश्रण दिया जाय तो उनके उत्पादन में बढोत्तरी होती है जिससे जल्दी और अधिक आमदनी होती है। मुख्य रूप से संकर नस्ल के बकरी उत्पादन में इस बात का ध्यान रखना चाहिए। बकरियों से अगल किये गए छौनों को 100-150 ग्राम दाना मिश्रण (मक्का दाना 40% + चोकर 32% + सरसों की खल्ली 25% + साधारण नमक 1% + खनिज मिश्रण 2%) प्रतिदिन देना चाहिए। दूध देने वाली बकरियों को चराई के अतिरिक्त 300-400 ग्राम प्रतिदिन दाना मिश्रण देना चाहिए। बारिश के दिनों में यदि चराने को कम मिले तो संग्रहित सूखा चारा के रूप में अरहर, चना, मटर, मूँग आदि दलहनी भूसी बकरी को खिलाएँ।

बकरियों की आवास व्यवस्था: बकरियों के लिए कोई विशेष प्रकार के आवास की आवश्यकता नहीं होती है परन्तु बरसात एवं सर्दी से बचाव के लिए एक बाड़े की आवश्यकता होती है। बकरियों का बाड़ा पूर्व-पश्चिम दिशा के समानान्तर A आकार

में बनाना चाहिए। बाड़े का फर्श कच्चा होना चाहिए। एक व्यस्क बकरी के लिए 1.5 वर्गमीटर स्थान की आवश्यकता होती है। बकरी बाड़े के सामने 10-15 फुट चौड़ा तथा 4-5 फुट ऊँचा स्थान तार की जाली इत्यादि से घेर देना चाहिए जिससे बकरियाँ उसमें भ्रमण कर सकें । बकरी आवास में 1 से 1.5 फुट ऊँची स्थानीय पदार्थो से निर्मित 1 से 2 फीट चौड़ी मचान बनाना चाहिए। ऊँचे स्थान पर बैठने का उनका व्यवहार के साथ-साथ साफ-सफाई में सुविधा होता है।

बकरियों के रोग एवं उपचार-

1. आन्तरिक परजीवी रोग- बकरी में आन्तरिक परजीवियों के चलते अधिक हानि होती है। आन्तरिक परजीवी में मुख्यत: गोल कृमि, (Round worm), टेपवर्म (Tape worm), एम्फीस्टोम आदि पाये जाते हैं। कीड़ों के रहने से रोग के लक्षण निम्न प्रकार के होते है: पशु का उत्पादन घट जाता है। शरीर का भार कम होने लगता है। घेरा हो जाता है, शरीर में खून की कमी होने लगती है। जबड़ो के नीचे सूजन हो जाता है। इसके बचाव के लिए यह आवश्यक है कि जहाँ पानी का जमाव हो वहाँ बकरी को नहीं चराना चाहिए। समय-समय पर दवा देना चाहिए। इसके लिए नीलवर्म, पानाक्योर आदि दवाइयाँ आती हैं। इन्हें खाली पेट देना चाहिए तथा दवा देने के बाद 4 घंटें तक खाना-पानी नहीं देना चाहिए। इस दवाई का घोल तीन माह के अन्तराल पर सभी बकरियों को देना चाहिए। गाभिन बकरी एवं दो महीना से कम के छौनो को नही देना चाहिए। यह ख्याल रहे कि बरसात के पहले एवं बाद में अवश्य दवाई दी जाय। इस तरह की कार्यवाई करने से आन्तरिक परजीवी रोग से मुक्ति मिल जाती है।

2. वाह्य परजीवी रोग- बाह्य परजीवी में प्राय: जूँ छौनों को पड़ जाते है। उससे छुटकारा पाने के लिए गैमक्सीन का प्रयोग करना चाहिए। दूसरी प्रमुख बीमारी खुजली है। यह काफी भयानक बीमारी होती है। इससे काफी नुकसान होता है। इससे बचाने के लिए प्रत्येक तीन महीना पर जहरीला घोल से स्नान कराना चाहिए। जहरीला घोल बनाने के लिए 5 मि०ली० सायथिओन एक लीटर पानी में मिलाना चाहिए। जहर स्नान के पहले बकरियों को पानी पीला देना चाहिए। उसके बाद मुँह मे जाबी लगा देना चाहिए ताकि स्नान के समय जहरीला घोल न पी सके तथा स्नान के बाद अपना देह चाट न सके। इसके बाद जहाँ बकरियाँ रहती हैं उस घर को 2.5% सायथिओन घोल से छिड़काव करते है। इस तरह साल में तीन-चार छिड़काव करने से खुजली होने का अंदेशा नहीं रहता है।

3. न्युमोनिया- यह बकरियों पर आक्रमण करने वाली अति सामान्य रोग है। बच्चों में यह ज्यादा होती है। यह रोग सर्दी लगने से भी पैदा हो सकती है। इससे प्रभावित बकरी को बुखार हो जाता है। साँस लेने में कष्ट होता है तथा खाँसी आती रहती है। ऐसी स्थिति मे तुरन्त पशुचिकित्सक को बुलाना चाहिए।

4. खुरहा- यह एक संक्रामक बीमारी है। इस रोग में जीभ, होंठ, मुँह तथा खुँरों में